1920 के दशक की शुरुआत में स्वराज पार्टी भारत की एक महत्वपूर्ण राजनीतिक पार्टी थी। यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर एक विभाजित समूह के रूप में उभरा और उस समय के राजनीतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वराज पार्टी की प्रमुख विशेषताएं और परिणाम इस प्रकार हैं:

पृष्ठभूमि:

1. असहयोग आंदोलन: असहयोग आंदोलन 1920 में दमनकारी रोलेट एक्ट और जलियांवाला बाग हत्याकांड की प्रतिक्रिया के रूप में महात्मा गांधी द्वारा शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध में भारतीयों को एकजुट करना था।
2. विधानमंडलों से वापसी: असहयोग आंदोलन के हिस्से के रूप में, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार के साथ असहयोग का आह्वान किया था, जिसमें केंद्रीय और प्रांतीय स्तर पर विधायिकाओं का बहिष्कार भी शामिल था। कई कांग्रेस सदस्यों ने विरोध में अपने निर्वाचित पदों से इस्तीफा दे दिया।

स्वराज पार्टी का गठन:

1. राय का अंतर: जबकि असहयोग आंदोलन शुरू में बहुत लोकप्रिय था और इसमें व्यापक भागीदारी देखी गई थी, 1922 में चौरी चौरा की घटना के बाद महात्मा गांधी द्वारा इसे अचानक बंद कर दिया गया था, जहां पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच हिंसक झड़प हुई थी।
2. कांग्रेस विभाजन: असहयोग आंदोलन के निलंबन और दृष्टिकोण में मतभेद ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर दरार पैदा कर दी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में एक गुट ने अहिंसा और बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों की समाप्ति की वकालत की, जबकि सी. आर. दास और मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में दूसरा गुट, ब्रिटिश शासन को चुनौती देने के लिए अधिक टकरावपूर्ण दृष्टिकोण में विश्वास करता था।
3. स्वराज पार्टी का गठन: 1923 में, विधायिका और टकराव की राजनीति में अधिक सक्रिय भूमिका का समर्थन करने वाले गुट ने स्वराज पार्टी का गठन किया। सी. आर. दास को इसके अध्यक्ष और मोतीलाल नेहरू को इसके सचिव के रूप में चुना गया।

प्रमुख विशेषताऐं:

1. चुनाव में भागीदारी: स्वशासन और संवैधानिक सुधारों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, स्वराज पार्टी ने प्रांतीय और केंद्रीय दोनों स्तरों पर चुनाव लड़ने और विधान परिषदों में सक्रिय रूप से भाग लेने का फैसला किया।
2. उद्देश्य: स्वराज पार्टी का प्राथमिक उद्देश्य राजनीतिक सुधारों और स्व-शासन के लिए दबाव डालने के लिए मौजूदा औपनिवेशिक विधायी ढांचे के भीतर काम करना था।
3. मध्यम दृष्टिकोण: जबकि स्वराज पार्टी ने असहयोग आंदोलन की तुलना में अधिक उदार दृष्टिकोण अपनाया, फिर भी इसका उद्देश्य भारत के लिए स्वशासन और राजनीतिक स्वायत्तता प्राप्त करना था।

परिणाम और प्रभाव:

1. चुनावी सफलता: इसके बाद हुए चुनावों में, स्वराज पार्टी ने अच्छा प्रदर्शन किया और प्रांतीय विधानसभाओं में महत्वपूर्ण संख्या में सीटें जीतीं। इसने भारतीय मतदाताओं के एक वर्ग के बीच अपने दृष्टिकोण की लोकप्रियता को प्रदर्शित किया।
2. संवैधानिक सुधारों पर प्रभाव: विधायिकाओं में स्वराज पार्टी की उपस्थिति ने उसे संवैधानिक सुधारों के लिए ब्रिटिश सरकार पर दबाव डालने की अनुमति दी। इसके फलस्वरूप अंततः 1935 का भारत सरकार अधिनियम लागू हुआ, जिसने पर्याप्त संवैधानिक परिवर्तन किये।
3. परंपरा: स्वराज पार्टी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण चरण को चिह्नित किया, जिसमें राजनीतिक भागीदारी के महत्व और स्व-शासन के लक्ष्य के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया गया।
4. अल्पकालिक: समय के साथ स्वराज पार्टी का प्रभाव कम हो गया और 1937 के प्रांतीय चुनावों के बाद धीरे-धीरे इसका भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में विलय हो गया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस स्वतंत्रता आंदोलन में प्रमुख शक्ति बनी रही।

1920 के दशक की शुरुआत में स्वराज पार्टी एक उल्लेखनीय राजनीतिक विकास थी, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर रणनीति में विचलन का प्रतिनिधित्व करती थी। हालाँकि इसने संवैधानिक सुधारों को प्रभावित करने में भूमिका निभाई, लेकिन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के विकसित होने के साथ इसका महत्व कम हो गया।

LEARNING MANTRAS